यौन और प्रजनन स्वास्थ्य: एनईपी 2020 की एक गायब कड़ी

यौन और प्रजनन स्वास्थ्य, यौन शिक्षा और बॉडी इमेज को समझना आदि को पाठ्यक्रम का एक अभिन्न अंग बनाना व्यापक रूप से अछूता रह रहा है, जिसे एक आलोचनात्मक दृष्टिकोण रखते हुए पूरी ताकत और विद्यार्थियों की भागीदारी के साथ लागू किया जाना बाकी है।

लेख-रिया गुप्ता, 3 सितंबर, 2020

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020, जिसकी भारत में एक लंबे समय से प्रतीक्षा थी, के आने के साथ ही इसके लचीलेपन और समावेशी स्वरूप के लिए विभिन्न प्रकार से सराहना की जा रही है। हालांकि, यौन और प्रजनन स्वास्थ्य, यौन शिक्षा और बॉडी इमेज को पाठ्यक्रम का एक अभिन्न अंग बनाना व्यापक रूप से अछूता ही रह रहा है, जिसे एक आलोचनात्मक दृष्टिकोण रखते हुए पूरी ताकत और विद्यार्थियों की भागीदारी के साथ लागू किया जाना बाकी है। हम जरा पीछे नजर दौड़ाएं और देखें कि हम में से कितने लोगों को आज भी उच्च माध्यमिक कक्षा में पढ़ाया गया 'प्रजनन अंगों' पर पहला सबक याद है? एक ऐसा विषय जो आमतौर पर निहित वर्जना के साथ देखा जाता था, जिसे शिक्षक के शुरू करने से पहले ही विद्यार्थी अलग-अलग सोच रखते हुए एक-दूसरे को देखना शुरू कर देते। मेरा मानना तो यही है कि हमारी अधिकांश असुविधा तो तब और भी बढ़ जाती थी जब हम शिक्षक को विषय को जल्द से जल्द जैसे-तैसे पूरा कर देने की हड़बड़ी में देखते थे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 जिसकी , भारत में एक लंबे समय से प्रतीक्षा थी के आने के साथ ही , इसके लचीलेपन और समावेशी स्वरूप के लिए विभिन्न प्रकार से सराहना की जा रही है। हालांकि, यौन व प्रजनन स्वास्थ्य, यौन शिक्षा और बॉडी इमेज को पाठ्यक्रम का एक अभिन्न अंग बनाना व्यापक रूप से अछूता ही रह रहा है, जिसे एक आलोचनात्मक दृष्टिकोण रखते हुए पूरी ताकत और विद्यार्थियों की भागीदारी के साथ लागू किया जाना बाकी है।

हमारे शिक्षाशास्त्र में गलती: दोष किसका ?

यौन और प्रजनन स्वास्थ्य का आग्रह करने वाली जो गायब कड़ी है वह संभवतः सही शिक्षाशास्त्र के बारे में है, जिसे अन्य सब मुद्दों से पृथक रख कर नहीं देखा जा सकता। यह शिक्षक और विद्यार्थी हैं जिनका पारिस्थितिकी तंत्र एक ही है जिसे हम 'समाज' कहते हैं। अक्सर जब हम अनेक बातों/मुद्दों को 'समाज' पर आरोपित करते हैं, तब क्या हम थोड़ा भी यह विचार करते हैं कि हम भी उसी समाज का ही समान हिस्सा हैं, सक्रिय रूप से या निष्क्रिय रूप से उसी यथास्थिति को बनाए रखने में योगदान दे रहे हैं जिसमें हम बड़े हुए हैं। हाल ही में, मैंने एनसीईआरटी की कुछ किताबें उठाईं और स्वास्थ्य शिक्षा और इसके ढांचे पर आधिकारिक अधिसूचना की जांच करने के लिए उनकी वेबसाइट को देखा। सराहनीय रूप से, मानसिक स्वास्थ्य के महत्व, अपने शरीर के बारे में जानने, यौन उत्पीड़न, शरीर में परिवर्तन, और इसी तरह के अन्य विषयों का सातवीं कक्षा के बाद पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रम में समावेश है, लेकिन मेरी थोड़ी सी भी स्मृति में, यौन और प्रजनन स्वास्थ्य के क्रियान्वयन और उस पर शिक्षकों के साथ वास्तविक चर्चा का होना कहीं मौजूद नहीं है। मैंने अपने स्कूल के शिक्षकों से ऊंची छोटी स्कर्ट नहीं पहनने और नाखूनों को काट कर रखने के बारे में अधिक सीखा, बजाय यह सीखने के कि अपने आप में (बॉडी) कैसे सहजता से रहा जाना चाहिए।

कोर्सवर्क इंटरैक्टिव है, दिमाग नहीं

याद है, एनसीईआरटी पाठ्यपुस्तकों के प्रत्येक अध्याय में छात्रों को सीखी गई अवधारणाओं के साथ सहवर्ती गतिविधियों में संलग्न करने के लिए एक रंगीन टेक्स्ट बॉक्स में कैसे गतिविधियां लिखी जाती थीं? जैसा भी हो, हम में से कितनों को यह याद है कि शिक्षकों ने वास्तव में उन गतिविधियों में विद्यार्थियों को कराया/जोड़ा हो? हमने पुराने शिक्षाशास्त्र का पालन करना जारी रखा है और आलोचनात्मक सोच के रवैये को विकसित करने के बजाय तथ्यात्मक सीखने पर ज्यादा जोर देते हैं। जब छात्रों का ऐसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर मूल्यांकन नहीं किया जाता है या परीक्षाओं में लिखने के लिए नहीं पूछा जाता है, जिसमें

किसी भी तरीके से उनकी आलोचनात्मक सोच को चुनौती नहीं दी जाती है, तो हम उनसे यह कैसे उम्मीद कर सकते हैं कि वे इसका अभ्यास भी कर पाएंगे? इस प्रकार शिक्षा का स्वरूप रैखिक होकर सिमट गया है, जिसमें आत्मनिरीक्षण और अनलर्निंग के लिए बहुत अधिक संभावनाएं नहीं है। शिक्षक और विद्यार्थी दोनों ही अपने जमे-जमाये सामाजिक 'स्व' से कठोर रूप में चिपक कर, सफलतापूर्वक हर क्षेत्र में पितृसत्तात्मक और बाध्यकारी संरचनाओं को आगे बढ़ा रहे हैं।

'पब्लिक' और 'प्राइवेट' का विरोधाभास: गहरी जमी सीख और व्यवहार

जब मैंने दो साल के लंबे गुणात्मक शोध के अंतर्गत अपने उत्तरदाताओं के रूप में किशोर लड़कियों के एक समूह पर ध्यान केंद्रित किया, तो मैंने उनके विचारों का पता लगाने की कोशिश की कि वे माहवारी के दौरान अपने शरीर को कैसे देखती हैं और वे माहवारी के दौरान स्वच्छता व्यवहारों का अभ्यास करने में कितनी सहज होती हैं। उनमें से एक भी इसका जवाब नहीं दे सकी और न ही खुलकर इसके बारे में बात कर सकीं। यहां तक कि किसी ऐसे व्यक्ति से जिसे वे जानते नहीं थीं उसके सामने भी वे अपने जननांगों के बारे में बताने के लिए 'नीचे' शब्द का प्रयोग कर रहीं थीं, जिसे भी कहने में उनकी आवाज में चिंता और शर्म झलकती थी। दिलचस्प बात यह है कि इस बारे में उनके तेवर विद्रोही थे कि माहवारी को लेकर उनपर लगाये जाने वाले प्रतिबंधों से वे कितना संकुचित महसूस करती हैं, लेकिन फिर भी, उनमें से किसी ने भी उनके बारे में सवाल उठाने की हिम्मत नहीं की क्योंकि ऐसा उन्हें उनकी माताओं द्वारा नैतिक और बौद्धिक रूप से निर्देशित किया गया होता है, जोकि अक्सर पीढ़ी-दर-पीढ़ी जेंडर भूमिकाओं को मजबूत करने के लिए सर्वाधिक उचित स्रोत होती हैं। यही वह गहरे जमी सीख या कंडीशनिंग है जिसके साथ हम में से अधिकांश बड़े होते हैं और हम में से सिर्फ एक-आध ही कोई होते हैं जो जीवन में बाद में उनके बारे में सवाल उठाने और बहस करने की हिम्मत करते हैं।

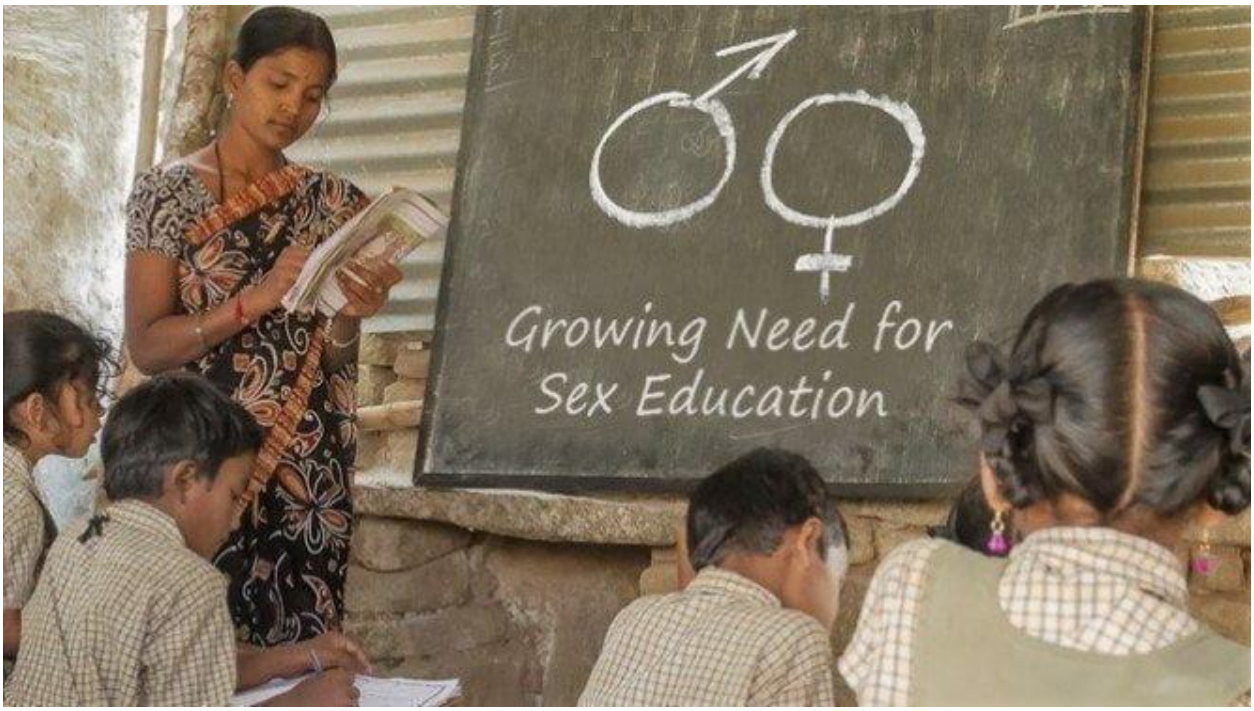

यौन और प्रजनन स्वास्थ्य का मुद्दा जितना महत्वपूर्ण लगता है, उतना ही यह भारतीय घरों के नितांत निजी दायरे में सीमित रहता है और लगातार लाज-शर्म से दबा रहता है।

Source: *Change.org*

निस्संदेह, यौन और प्रजनन स्वास्थ्य का मुद्दा जितना महत्वपूर्ण लगता है, उतना ही यह भारतीय घरों के नितांत निजी दायरे में सीमित रहता है और लगातार लाज-शर्म से दबा रहता है। यहाँ हम इस बात पर जोर डालना चाहेंगे कि पाउलो फ्रेअरे ने कितने सटीक रूप से यह स्पष्ट किया है कि कैसे 'कल्चर ऑफ़ साइलेंस' उत्पीड़ितों का शिक्षाशास्त्र है और ऐसे समस्याग्रस्त मुद्दे जिनका सामान्यीकरण करने के लिए निरंतर बहस की आवश्यकता है, हमारी शैक्षिक प्रणाली उनका पालन करने के लिए बाध्य करने वाले प्रमुख प्रवर्तकों में से एक है।

हम क्या कर सकते हैं ?

'उच ' मार्ग अपनाना

यह प्रभावी रूप से तब तक नहीं बदलेगा जब तक कि स्कूलों जैसे सीखने के स्थानों के माध्यम से बच्चों में एक निश्चित व्यवहार परिवर्तन लाने के लिए इसे कानूनन अनिवार्य नहीं किया जाता है। यह महसूस करना बेहद आवश्यक है कि यौन और प्रजनन स्वास्थ्य के बारे में बात करना, और अपने शरीर के बारे में सीखना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि कोडिंग या व्यावसायिक कौशल जो अनिवार्य रूप से बच्चों को सिखाया जाता है। उदाहरण के तौर पर, नीदरलैंड में एक संपूर्ण यौन आधारित निर्देशित शैक्षिक कार्यक्रम का पालन किया जाता है, जो चार साल की उम्र के बच्चों को यौन और यौनिकता के बारे में शिक्षित करता है। चर्चा स्पष्टतः यौन कृत्यों के बारे में नहीं होती है, लेकिन वह स्नेह, सम्मान और निकटता के इर्दगिर्द बात करती है, जो बच्चों को यौनिक खुशहाली के विभिन्न पहलुओं से परिचित कराने के लिए आवश्यक होती हैं। नतीजा? नीदरलैंड में किशोर गर्भधारण और यौन संचारित बीमारियों की संख्या सबसे कम है। यह सर्वाधिक जेंडर बराबरी वाले राष्ट्रों में से एक है।

इसके विपरीत, यदि हम अमेरिका का यौन स्वास्थ्य शैक्षिक पाठ्यक्रम देखते हैं, तो यह संयम पर केंद्रित है और यौन स्वास्थ्य और इसके महत्व पर एक सतही ज्ञान प्रस्तुत करता है। संयुक्त राज्य अमेरिका को यौन स्वास्थ्य पर पाठ्यक्रम विकसित करने के लिए पर्याप्त फंड और गैर-लाभकारी संगठनों को खोजने के लिए संघर्ष करना पड़ता है। परिणाम? किशोर गर्भधारण के मामलों में अमेरिका सबसे ऊपर है और यौन संचारित रोगों (एसटीडी) के सर्वाधिक मामले भी यहीं हैं।

जुड़ें, बहस करें, सहज बनायें

जब यौन और प्रजनन स्वास्थ्य की बात आती है तो सामाजिक-व्यवहार परिवर्तन वास्तव में एक धीमी प्रक्रिया है क्योंकि हम एक ऐसे ढांचे को चुनौती देने की बात कर रहे होते हैं जिसमें हम जन्म से ढले हुए होते हैं, लेकिन छोटी उम्र में इस बदलाव को वैध बनाने का एक भरपूर प्रयास से नीतिगत स्तर पर भी नुकसान नहीं होगा। मोटे तौर पर, इस मुद्दे पर काम करने के लिए दो मुख्य कदम उठाए जा सकते हैं:

1. स्कूलों में महीने में एक बार एक व्यवहार विज्ञान की अनिवार्य कक्षा होनी चाहिए, जहां माता-पिता, शिक्षक और बच्चे जुड़ें, एक मंच पर आयें, और यौन और प्रजनन स्वास्थ्य के महत्व को समझें। चूंकि यौन और प्रजनन स्वास्थ्य काफी हद तक भारतीय घरों की चार दीवारों के भीतर सीमित है, इसलिए इसे सार्वजनिक बहस के हिस्से के रूप में शामिल करते हुए सामान्य किया जाना आवश्यक है। इसलिए यह सफ़र अकेले विद्यार्थियों के साथ नहीं, बल्कि माता-पिता को भी शामिल करके शुरू हो। बदलते समय के साथ, माता-पिता को भी यौन स्वास्थ्य के बारे में बच्चों के साथ बात करने की सही उम्र के बारे में संवेदनशील होना चाहिए।
2. सरकारी स्कूलों में दिए जाने वाले यौन और प्रजनन स्वास्थ्य मॉड्यूल विकसित करने वाले गैर-लाभकारी संगठनों में सकारात्मक वृद्धि हुई है। हालांकि यह महत्वपूर्ण है कि ज्ञान को बिना किसी भेदभाव के बांटा जाए, अन्यथा यह किशोरों में स्वायत्तता और निर्णय के लिए जिम्मेदारी को विकसित नहीं कर पायेगा कि वे अपने शरीर या उसके प्रति अनुभूति के बारे में चुनाव कर सकें। वास्तव में, इस तरह की आंशिक जानकारी देने का मतलब अधूरा ज्ञान देना होगा और फिर से 'सामान्य' करने की कड़ी हाथ से छूट जाएगी।

इस तथ्य को देखते हुए कि व्यवहार और शिक्षा का सीधा संबंध है, यौन और प्रजनन स्वास्थ्य के विषय को 'सामान्य' मानते हुए इसकी जड़ तक गहरे जाकर संबोधित करना चाहिए।

इस तथ्य को देखते हुए कि व्यवहार और शिक्षा का सीधा संबंध है, यौन और प्रजनन स्वास्थ्य के विषय को 'सामान्य' मानते हुए इसकी जड़ तक गहरे जाकर संबोधित करना चाहिए। इससे जुड़ी वर्जना /कलंक किसी व्यक्ति के लिए अपने शरीर से संबंधित महत्वपूर्ण मुद्दों के बारे में बात करने के लिए चर्चा को दमघोंटू और एक दूर का सपना बना देते हैं।